दक्षिण-दक्षिण सहयोग के बीच भारत-अफ्रीकी संबंध

ऋषया धर्माणी | राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर एवं विकासात्मक नीति में स्वतंत्र शोधकर्ता। ईमेल: rishya.dharmani@gmail.com

ग्लोबल साउथ अर्थात् विकासशील देश अंतरराष्ट्रीय बहुपक्षीय व्यवस्था में लगातार एक अनोखी आवाज़ बनकर उभरे हैं। इस परिभाषा से तात्पर्य विकासशील देशों के अपना विशेष दर्जा प्राप्त करने और अपनी विशेष चिन्ताओं को मान्यता दिलाने की दिशा में संघर्ष जारी रखने से है। व्यापार के मामले में प्रतिकूल वैश्विक हालात, निवेश और वित्तीय अवसरों का अभाव, राजकीय ऋणों का डूबना, राजनीतिक अस्थिरता और खनिज संसाधनों का दोहन (शोषण) के मिलेजुले प्रभाव के कारण सदियों से चले आ रहे शोषण जैसे मुद्दों से ही समूचा आर्थिक ढांचा कमजोर बना हुआ है। अभी हाल में जलवायु, कोविड, संघर्ष और मुद्रास्फीति तथा जीवन-यापन की बढ़ती लागत (4सी: क्लाइमेट, कोविड, कॉन्फ्लिक्ट और कॉस्ट ऑफ लिविंग) जैसे कारकों के कारण भी राजनीतिक अर्थव्यवस्थाओं पर दबाव और ज्यादा बढ़ता जा रहा है।

भारत ने स्वयं को विकासशील देशों की असली आवाज़, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के जनक और जी-77 विचार-विमर्श में सक्रिय भागीदार के रूप में स्थापित किया है। दशकों से उसने अपनी बढ़ती साख की पूंजी के बल पर वैश्विक नियम निर्धारण व्यवस्था में अहम सफलताएं प्राप्त की हैं।

प्राचीन संबंध

सिंधु घाटी और तत्कालीन अफ्रीकी सभ्यताओं के बीच व्यापार संबंधों के दस्तावेज मौजूद हैं। बाद में यूनान के प्राचीन ऐतिहासिक उल्लेख में मिस्र और भारतीय शासकों के बीच हिन्द महासागर के रास्ते समुद्री व्यापार का वर्णन है और यही बाद में आर्थिक और विविध सांस्कृतिक आदान-प्रदान का स्थायी मार्ग भी बना। व्यापार संस्कृति के माध्यम से 'मानसून संस्कृति' का विकास हुआ और हिन्द महासागर के जरिये विभिन्न नस्लों और प्रजातियों के बीच संबंध स्थापित होने से हाथी दांत और सोने इत्यादि का कारोबार होने लगा। फिर, मध्यकालीन दौर में अबीसीनियाई तथा अन्य कई अफ्रीकी लोग भारतीय साम्राज्यों की सेवा में रहने लगे थे। औपनिवेशिक चरण में ठेके पर काम करने वाले अनुबंधित श्रमिक या 'गिरमिटिया लोग' जबरन विस्थापित किए जाने पर अफ्रीका की ब्रिटिश कॉलोनियों में चले गए जिससे सांस्कृतिक संबंध भी विकसित हुए।

यह भी स्मरणीय है कि गांधीजी को नैतिक और राजनीतिक अहसास दक्षिण अफ्रीका के अनुभवों से ही हुआ था। उसके बाद ही नैतिक नेता के रूप में उनका कद वहीं बढ़ा था जब क्वामे एनक्रूमा, अल्बर्ट लुथुली, नेल्सन मंडेला और केनेथ कौंडा जैसे अफ्रीकी नेताओं ने गांधीवादी नैतिकता, विशेषकर उनके सविनय अवज्ञा आन्दोलन की भावना के प्रति आभार व्यक्त किया। इन ऐतिहासिक और वैचारिक सहमति पर आधारित संबंधों से प्रेरित होकर ही भारतीय और अफ्रीकी नेताओं ने नव-उपनिवेशवाद की विचारधारा का विरोध करने का संकल्प लिया जिससे उपनिवेशवाद-मुक्त विश्व की नई संरचना का सूत्रपात हुआ। भारत नए स्वतंत्र अफ्रीकी देशों की स्थिरता और कल्याण में गहरी रुचि के साथ संयुक्त राष्ट्र में हमेशा सक्रिय रहता है। अफ्रीकी देशों में संयुक्त राष्ट्र शांति सेना में अपने सैनिक भेजने वाले देशों में भारत सबसे आगे की पंक्ति में है। अफ्रीकी धरती पर संयुक्त राष्ट्र के सबसे पहले मिशन ओएनयूसी के तहत कांगो में 1960 से 1964 के बीच भी भारत ने शांति सैनिक भेजे थे।

"विकासशील देशों के बीच साउथ-साउथ सहयोग (एसएससी) के गठन में बांडुंग सम्मेलन वैश्विक राजनीतिक आंदोलन के रूप में महत्वपूर्ण पड़ाव रहा है। एसएससी असल में उत्तरी देशों के दबदबे वाली राजनीतिक और आर्थिक प्रणाली को चुनौती देने के उद्देश्य से ही अस्तित्व में आया था। 1950 के दशक से आज तक इसने अनेक उतार-चढ़ाव और तेजी-मंदी के दौर देखे हैं।"[1] विश्व जहां नई चुनौतियों और नए अवसरों को देख रहा है वहीं 'ग्लोबल साउथ' में भी स्पष्ट भू-राजनैतिक और भू-आर्थिक परिवर्तन दिखने लगा है।

21वीं शताब्दी में वैश्विक प्रशासन मानकों के पुनर्वैश्वीकरण और पुनर्निर्धारण से एएफजीसी, बी3डब्ल्यू, ब्लू डॉट नेटवर्क, एडीबी जैसे अनेक सशक्त संस्थापक और विकासपरक जवाब सामने आए हैं। सहयोग, संघर्ष और स्पर्धा के क्षेत्रों में नई संभावनाएं तलाशने का सिलसिला शुरू हो गया। सक्रिय द्विपक्षीय और बहुपक्षीय एजुलविनी सहमति, वैश्विक स्वास्थ्य समानता (इक्विटी) तथा जलवायु न्याय और ऊर्जा सुरक्षा की पक्की व्यवस्था हो जाने से भारत-अफ्रीकी सहयोग नई ऊंचाइयों पर पहुंच गया (इसमें तेल, गैस, खनिज अयस्क और महत्वपूर्ण खनिजों तक पहुंच विशेष उल्लेखनीय है)। संयुक्त राष्ट्र तंत्र के अतिरिक्त भी ईसीओडब्ल्यूएएस, अफ्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार समझौता, ब्रिक्स, ओआईसी, एडीबी, एनडीबी, इब्सा (आईबीएसए), गरीबी और भुखमरी कम करने संबंधी वार्ता,

टेली-लॉ
वंचितों तक पहुंच

टेली-लॉ क्या है?

टेली-लॉ का अर्थ है कानूनी जानकारी और सलाह देने के लिए संचार और सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग। वकीलों और लोगों के बीच यह ई-इंटरेक्शन सामान्य सेवा केंद्रों पर उपलब्ध वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग बुनियादी ढांचे के माध्यम से होगा।

टेली-लॉ की अवधारणा कानूनी सेवाओं के फ्रंट कार्यालयों में तैनात वकीलों के एक पैनल के माध्यम से कानूनी सलाह देने की सुविधा प्रदान करना है। प्राधिकरण और सी.एस.सी. परियोजना का लक्ष्य 1,00,000 ग्राम पंचायतों में पहचाने गए ग्राम स्तरीय उद्यमियों द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग/टेलीफोन सुविधाओं के माध्यम से नागरिकों को पैनल वकीलों से जोड़ना है।

सामयिक

टेली-लॉ 2.0 (टेली-लॉ और न्याय बंधु (प्रो बोनो) कानूनी सेवा कार्यक्रम का एकीकरण) कार्यक्रम 25 अगस्त 2023 को नई दिल्ली के सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम में लॉन्च किया गया था। इस कार्यक्रम में 50 लाख कानूनी सलाह की उपलब्धि का भी जश्न मनाया गया।

स्रोत : पीआईबी

एससीओ और छोटे द्वीपीय देशों के संगठन एआरएसआईएस जैसे क्षेत्रीय संगठनों में भी सहयोग बढ़ा है। "आईएसए और सीडीआरआई दोनों का गठन अन्य देशों के साथ आपसी संबंध बनाने और उन्हें मजबूत करने की दिशा में भारत के प्रगतिशील और सहयोगपूर्ण दृष्टिकोण का उदाहरण है। इन संगठनों के माध्यम से अफ्रीकी देशों को समर्थन देकर और उनसे भागीदारी करके भारत को अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय एजेंडा को प्रभावित करने का अवसर मिलता है।"[2]

समुद्री डकैती पर रोक लगाने, समुद्री व्यापार की सुरक्षा सुनिश्चित करने, मानवीय और आपदा राहत सहायता, बहुपक्षीय विकास सहायता, सामाजिक क्षेत्र में निवेश, आईसीसीआर के माध्यम से लोगों के बीच बढ़ते संबंधों जैसे विभिन्न प्रकार के तालमेल से अफ्रीका की विकास यात्रा में भारतीय व्यापारियों ने महत्वपूर्ण निवेश किए हैं।

एक्सिम (निर्यात-आयात) बैंक ने सतत विकास का दृष्टिकोण अपनाकर फोकस अफ्रीका कार्यक्रम और भारत-अफ्रीका भागीदारी परियोजना, 2022 तक 17 भारत-अफ्रीका कॉनक्लेव, भारत-अफ्रीका फोरम (मंच) और मॉरीशस के साथ 2021 में हुए भारतीय उद्योग व्यापक आर्थिक सहयोग और भागीदारी समझौते को व्यावहारिक रूप प्रदान किया है। भारत और दक्षिण अफ्रीकी कस्टम्स यूनियन प्राथमिकता व्यापार समझौता, घाना और सेनेगल के साथ संयुक्त व्यापार समितियों की बैठकें और 17वीं सीआईआई-एक्सिम बैंक डिजिटल कॉनक्लेव जैसी अन्य पहलों से भी अफ्रीकी देशों में भारत के निजी क्षेत्र के निवेश के विकास को प्रोत्साहन मिला है।

अफ्रीका से भारत को होने वाले निर्यात की दर में 23 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि हुई है और कुल व्यापार 2001 के मुकाबले 2013 में बढ़कर चौदह गुना हो गया है। भारत अफ्रीकी देशों को निर्यात करने वाले पांच सबसे बड़े निवेशकों में से है। सरकार से सरकार के स्तर पर आदान-प्रदान में सबसे कम विकसित (एलडीसी) देशों के लिए ड्यूटी-मुक्त दरें और ऋण पत्रों (एलओसी) का विस्तार शामिल है। ओएनजीसी जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों ने उत्तरी और पश्चिमी अफ्रीका में निवेश किया है। रिलायंस लिमिटेड को नाइजीरिया और मेडगास्कर में तेल खुदाई ब्लाकों में ठेके दिए गए हैं। कई भारतीय कंपनियों ने दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, सूडान, मोज़ाम्बिक में तथा घाना और नाइजीरिया के प्राकृतिक संसाधनों में बड़े निवेश किए हैं। ये निवेश कृषि व्यापार, फॉर्मास्यूटिकल्स, सूचना प्रौद्योगिकी और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में हुए हैं। 2022-23 में भारत और अफ्रीकी देशों के बीच कुल कारोबार लगभग 100 अरब डॉलर तक पहुंच गया।[3] अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान है कि भारत के सीधे विदेशी निवेश का 22.5 प्रतिशत अफ्रीकी देशों में किया गया और यह मौजूदा निवेश 32 अरब डॉलर का है।

मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका और मोरक्को ने भी भारत में निवेश किए हैं जो लाखों डॉलर के हैं। भारत में अभी अफ्रीका के सीधे विदेशी निवेश 73 अरब डॉलर के हैं। दोनों भागीदारों ने सामने वाले पक्ष का लाभ ध्यान में रखने के साथ अपने हितों की सुरक्षा की भी पक्की व्यवस्था रखी है। उदाहरण के लिए, 2009 में भारत-अफ्रीका हाइड्रोकार्बन्स सम्मेलन में भारत ने सहयोग के पांच खास क्षेत्रों पर खास ध्यान दिया- कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस सप्लाई का विस्तार करके ऊर्जा सुरक्षा पक्की करना; अपस्ट्रीम और ग्रीनफील्ड के आपसी अवसरों में निवेश बढ़ाना;

भारत का कौशल (खासकर डिजिटल सार्वजनिक वस्तुओं और स्वास्थ्य देखरेख क्षेत्रों में) तथा प्रतिभा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में किफायती तरीके से निवेश करना।

''वाशिंगटन सहमति से निकलो! दक्षिणी सहमति से जुड़ो।''[4]

''कोई देश अपनी भौगोलिक स्थिति के आधार पर ही नहीं बल्कि अनेक आर्थिक तत्वों तथा जनसंख्या के जीवन-स्तर के आधार पर उत्तरी या दक्षिणी माना जाता है।''[5] सबसे कम विकसित देशों और उभरते बाजारों और विकासशील देशों के बीच एजेंडा तय करने की प्रक्रिया में बराबरी के भागीदार बनने पर हुई सहमति के आधार पर ग्लोबल साउथ नियम पालन करने वाले की बजाय नियम तय करने वालों की स्थिति में आ रहा है। त्रिकोणीय सहयोग जैसी अनेक व्यवस्थाएं बनाने के प्रस्ताव आए हैं जिसमें दो सदस्य विकासशील देशों (साउथ) के और एक प्रतिनिधि विकसित (नॉर्थ) देश से रहेगा और यह संगठन तकनीकी और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने में सहयोग करेगा। इसमें दोनों पक्षों को लाभ होना निश्चित है क्योंकि स्वामित्व की भावना और साझे लक्ष्यों के कारण इसमें शामिल होने वाले विकासशील देशों की क्षमता और योग्यता का निश्चित रूप से विकास होगा। जैसे की जी 7+ अंतर-महाद्वीपीय ग्रुप है जिसमें अफ्रीका, एशिया, ओशेनिया और कैरिबिया महाद्वीपों के 20 देश शामिल हैं। साथी देशों से सीखना जी 7+ की स्थापना के समय से ही एफ2एफ (फ्रेजाइल टू फ्रेजाइल यानी कमजोर से कमजोर को) सहयोग का मुख्य स्तम्भ और विकासशील देशों के परस्पर सहयोग का असल साधन रहा है। यह जी 7+ देशों की जानकारी और शुरूआती दौर से लचीलापन विकसित होने तक की चुनौतियों के अनुभव को मान्यता देने पर आधारित होता है।[6]

विकासशील देशों के बीच तकनीकी सहयोग को प्रोत्साहन देने और क्रियान्वित करने के लिए महत्वपूर्ण ब्यूनस आयरस कार्य योजना (बापा) का 1978 में संयुक्त राष्ट्र के 138 सदस्यों ने अनुमोदन किया था। इसने सबसे कम विकसित देशों के बीच सहयोग का प्रस्ताव रखा था। ब्यूनस आयरस कार्य योजना (बापा+40) ने विकासशील देशों के बीच सहयोग को 'दक्षिण (गरीब) देशों और उनके लोगों के बीच अपने राष्ट्रीय कल्याण, अपनी राष्ट्रीय और सामूहिक आत्मनिर्भरता तथा स्थायी विकास लक्ष्यों सहित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर माने जा चुके विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में एकजुट होकर प्रयास करने की अभिव्यक्ति' की संज्ञा दी है (पैरा 8)। विकासशील देशों के बीच सहयोग संबंधी संयुक्त राष्ट्र कार्यालय, विकासशील देशों के बीच सहयोग के बारे में संयुक्त राष्ट्र का दूसरा उच्च स्तरीय सम्मेलन, या बापा+40 में दक्षिण-दक्षिण संबंधों से जुड़े जाल सम्मिलित हैं।

दक्षिण-दक्षिण सहयोग और क्षमता विकास के बारे में 2010 में आयोजित बोगोटा उच्चस्तरीय सम्मेलन से समानता-आधारित भागीदारी और क्षमता विकास व्यवस्था पर चर्चा और तेज हो गई। 2011 के सहायता प्रभावशीलता संबंधी मंच के बुसान उच्च स्तरीय मंच में एसएससी पर ध्यान केंद्रित किया गया था। 2022-23 में सबसे कम विकसित देशों के लिए दोहा कार्ययोजना के तहत महामारी से उबरने के उद्देश्य से गठित नई भागीदारी व्यवस्था संसाधन जुटाने में लगी है। इसी प्रकार एलडीसी5 दक्षिण-दक्षिण सहयोग की ताकत बढ़ाने की दिशा में संयुक्त राष्ट्र की अगुवाई की पहल है। ''2017 में स्थापित भारत-संयुक्त राष्ट्र विकास भागीदारी कोष 15 करोड़ डॉलर का वित्तीय तंत्र है जिसने सबसे कम विकसित 18 देशों में 24 परियोजनाओं के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई है। साथ ही, 29 एसआईडी और 10 एलएलडीसी में भी परियोजनाओं को प्राथमिकता दी जा रही है। गरीबी और भुखमरी दूर करने के लिए भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका (इबसा) कोष 2004 में स्थापित किया गया था और इसने सबसे कम विकसित देशों में 22 परियोजनाओं को आर्थिक सहायता दी है जिस पर कुल उपलब्ध संसाधनों में से 62 प्रतिशत से ज्यादा खर्च हुए हैं।[7] भारत-संयुक्त राष्ट्र विकास भागीदारी कोष दक्षिण-दक्षिण सहयोग के लिए संयुक्त राष्ट्र का विशेष उद्देश्य से 2017 में स्थापित कोष है। भारत इसका नेतृत्व और समर्थन करता है तथा इसका प्रबंध दक्षिण-दक्षिण सहयोग संबंधी संयुक्त राष्ट्र कार्यालय- यूएनओएसएससी करता है। यह कोष छोटे द्वीपीय देशों, सबसे कम विकसित देशों, जमीन से घिरे विकासशील देशों और आपदा प्रभावित क्षेत्रों के साथ भागीदारी पर जोर देता है। 2020 में इस परियोजना में शामिल होने वाले देशों में से 40 प्रतिशत देश सबसे कम विकसित देश (एलडीसी) ही थे।[8]

दक्षिण अफ्रीका सहयोग के लिए भावी पहलें परिणामोन्मुख और राष्ट्रीय प्रणालियों के साथ तालमेल रखने की दिशा में सक्रिय होनी चाहिए। भागीदारों को मिलकर काम करने के नेटवर्क विकसित करने होंगे ताकि एसडीजी और एमडीजी जैसे वैश्विक लक्ष्य प्राप्त किए जा सकें।

दोहा कार्ययोजना अपने इस्तांबुल प्रारूप पर आधारित ''2011 से 2020 के लिए 10-वर्षीय नीति एजेंडा था जिस पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की सहमति बन गई थी तथा जिसका उद्देश्य सबसे कम विकसित देशों की चुनौतियों का समाधान करना, जोखिम कम करना और नए अवसरों में वृद्धि करना था। उसका असल उद्देश्य सबसे कम विकसित देशों के सामने गरीबी दूर करने, अंतरराष्ट्रीय विकास लक्ष्य प्राप्त करने और एलडीसी को उभरने में मदद करने की दिशा में आने वाली ढांचागत कठिनाइयों को खत्म करना है।''[9] इन देशों की विकास तालिका में शामिल होने की मांग पूरी

करने की दिशा में किए जा रहे उपायों को केवल वैचारिक न रखकर व्यावहारिक बनाने की कोशिश में वैश्विक दक्षिणी सहयोग का स्वरूप अब जटिल हो गया है। एलडीसी-देश अब विदेश नीति में लचीलापन लाने के मामले में नीतिगत स्वायत्तता की मांग करने लगे हैं तथा समानता का व्यवहार चाहते हैं। ''इस्तांबुल प्रारूप के पैरा 132 में दक्षिण-दक्षिण सहयोग की एकजुटता और गुट-निरपेक्ष आन्दोलन में पहली बार परिभाषित दक्षिण-दक्षिण सहयोग के मूल सिद्धांतों में से कई सिद्धांतों पर बल दिया गया है। ये हैं-राष्ट्रीय सार्वभौमिकता, राष्ट्रीय स्वामित्व और स्वतंत्रता, समानता तथा घरेलू (आंतरिक) मामले में बिना किसी शर्त या हस्तक्षेप के तथा आपसी लाभ को ध्यान में रखने के सिद्धांत।''[10]

दक्षिण-दक्षिण सहयोग बढ़ाने का नुस्खा

कृषि, खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण विकास की उत्पादक क्षमता के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। एलडीसी देशों को व्यापार और आर्थिक समन्वयन के जरिये लचीली व्यवस्था तैयार करनी होगी। कई अफ्रीकी देश निर्यात वाले उत्पादों के समूह पर ही निर्भर हैं; वैश्विक मांग में अचानक तेजी और उतार-चढ़ाव से वहां आर्थिक संकट का खतरा बन सकता है। सबसे कम विकसित देशों में से 85 प्रतिशत तो वस्तु-निर्यात पर ही निर्भर हैं। उन्हें सहायता और निवेश जुटाकर प्रशासन मानक और मानवीय-सामाजिक विकास निष्पादन को बेहतर बनाना होगा। प्राकृतिक उतार-चढ़ाव के लिए ऋण समझौते इसका उदाहरण हैं जिनसे ये देश ब्याज-भुगतान के चंगुल से आजाद होकर पर्यावरण संरक्षण पर जोर दे सकते हैं।

''व्यापार में जोरदार वृद्धि के बावजूद दोनों पक्षों के बीच व्यापार की संरचना में काफी अंतर है। भारत को होने वाले अफ्रीकी निर्यातों में मूल रूप से कच्चा तेल और प्राथमिक वस्तुएं शामिल हैं जबकि अफ्रीकी देशों को भारत से जाने वाले निर्यातों में विविध वस्तुएं शामिल हैं और इनमें मैन्युफैक्चर्ड वस्तुएं और प्रौद्योगिकी आधारित सामान होता है।''[11] अभी हाल में निर्यात किए गए संक्रमित कफ सिरप से हुई मौतों से भारत की साख को झटका पहुंचा है। बार-बार की राजनीतिक अस्थिरता, परिवहन लागत, खराब व्यापार परिवेश और अफ्रीकी संसाधनों की बेतहाशा सुरक्षा के कारण गंभीर चुनौती बनी हुई है। अधिकांश निवेश तो ब्राउनफील्ड परियोजनाओं में हुआ है जिनमें से 70 प्रतिशत अकेले मॉरीशस में हुआ था।[12] भारत के लिए जरूरी है कि वह अफ्रीकी देशों के साथ व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते को, लोगों से लोगों के बीच मजबूत भागीदारी संबंध विकसित करे (अदिस अबाबा में आईआईटी, समूचे अफ्रीकी नेटवर्क की तरह भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पर आधारित परियोजनाएं चलाए, औद्योगिक सहयोग और जानकारी आदान-प्रदान करे (अफ्रीका में वेल्यू चेन को सशक्त बनाने के लिए कपास तकनीकी सहायता कार्यक्रम जैसी योजनाएं चलाए) तथा पर्यटन संपर्क मजबूत करे (2002-10 के बीच भारत से अफ्रीका के बीच संभावित चिकित्सा पर्यटन दोगुना हुआ)।

दक्षिण-दक्षिण सहयोग को किसी जाल में फंसने से बचाने के लिए ''सक्रिय गुट निरपेक्षता'' की लैटिन-अमेरिकी धारणा अपनाई जा सकती है जिसमें सरकारें प्रादेशिक, विदेशी और आर्थिक संचालन में समन्वय की दृष्टि से मजबूत क्षेत्रीय तंत्रों का निर्माण करती हैं। यूरोपीय संघ और आसियान की सदस्य देशों के बीच सहयोग का मूल प्रारूप तैयार करने में आंशिक सफलता भी याद रखी जानी चाहिए। नाइजर में हुए तख्ता पलट में 'इकोवास' की चेतावनी भी अहम घटक थी। दक्षिण-दक्षिण में भविष्य में जलवायु (आपदा जोखिम रोकथाम), टेक्नोलॉजी हस्तांतरण, वैश्विक प्रशासन तंत्र (जैसे विफल ट्रिप्स छूट), उभरते और उभर चुके सबसे कम विकसित देशों की सफलता, बुनियादी ढांचे के बदलाव पर अधिक निवेश, गरीब देशों से भुगतान को बढ़ावा देना और डायस्पोरा (प्रवासियों) के निवेश संसाधन और खनिजों के निर्यात मूल्यवर्द्धन को सौदेबाजी का मुद्दा बनाना भी काफी महत्व कारक हो सकते हैं। एशिया, प्रशान्त क्षेत्र और अफ्रीका के देशों के वैश्विक विकास में भागीदार बन जाने से विकास परिवेश में भी बड़ा बदलाव आ गया है।

अब 2030 के एजेंडा में ये परिवर्तन परिलक्षित किए गए हैं; विकास के समक्ष चुनौतियां, गरीबी और जलवायु से संघर्ष और अपराध में बदलाव; और ये परिवर्तन बहुआयामी तथा अंतर-द्वीपीय हैं और इनके समाधान के लिए विविध वैश्विक लक्ष्यों को अधिक समग्र तरीके से प्राप्त करने के लिए विविध हितार्थियों की दृष्टि से उपाय अपनाने होंगे।[13]

ऐसे में सघन महत्वपूर्ण भागीदारी विकसित करने की

आवश्यकता है जो व्यावहारिक और मांग के अनुरूप हो। जिसमें केवल वित्त व्यवस्था पर ही ध्यान न हो बल्कि मानव संसाधनों, ज्ञान, टेक्नोलॉजी और स्थिरता पर भी ध्यान दिया जाए। ''असल उद्देश्य सिर्फ टेक्नोलॉजी हस्तांतरित करना मात्र ही नहीं बल्कि बाहर से आने वाले पात्रों की तरह सहायता देने वाले भी सीखने और सह-निर्माण में भी भागीदारी करें और वे 'सुविधा प्रदाता' की हैसियत से क्षमता के विकास और समूची प्रक्रिया में तेजी लाने की भूमिका भी निभा सकते हैं।''[14]

दक्षिण अफ्रीका सहयोग के लिए भावी पहलें परिणामोन्मुख और राष्ट्रीय प्रणालियों के साथ तालमेल रखने की दिशा में सक्रिय होनी चाहिए। भागीदारों को मिलकर काम करने के नेटवर्क विकसित करने होंगे ताकि एसडीजी और एमडीजी जैसे वैश्विक लक्ष्य प्राप्त किए जा सकें। एसएससी के बारे में यूएनओएसएससी की मसौदा रिपोर्ट में ''अन्तर-सरकार प्रक्रियाएं अपनाने, क्षमता निर्माण, जानकारी का प्रबंधन और उसे साझा करना, दक्षिण-दक्षिण त्रिकोणीय सहयोग समाधान प्रयोगशाला और न्यास कोष प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित किया गया है।''[15] इसी भावना से एसएससी के बारे में ओईसीडी की रिपोर्ट में भी क्षमताओं को मजबूत करने, सूचना की गुणवत्ता और जानकारी साझा करने पर जोर दिया गया है। विभिन्न संगठनों के घोषणापत्रों में अनेकानेक समानताओं के कारण सहयोग परियोजनाओं की लागत बढ़ जाती है और विवाद भी खड़े हो जाते हैं। सहायता में अंतर संबंध की कमी के कारण सहायता के पूरे लाभ प्राप्त करने का पूरा दायित्व सहायता लेने वाले देश पर ही आ जाता है। ❑

समापन टिप्पणियां

1. ग्रेयांड गिल्स : 557
2. ओगुंतुआसे : 9
3. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx-?PRID=1932726
4. चेरूएंडओवि : 2-3
5. मैक-कैन : 462
6. कैरमोडी
7. अब्देनुर, द फोन सेका : 1476
8. https://unsouthsouth.org/2023/03/05/unossc-ibsa-un-fund-impact-idc-development/
9. India-UNDevelopmentPartnershipFundAtaGlance,September 2020
10. यू एन-ओएचआरएलएलएस-9
11. आईबिड
12. एक्सिम : 12
13. द सिक्वेरिया 21
14. होसोनोआ एटऑल
15. https://unsouthsouth.org/2022/02/02/unosscs-strategic-framework-2022/2025-will-enhance-south-south-cooperation-toward-achievement -of-sdgs

सन्दर्भ

1. इंटरनेशनल इंस्टिच्यूट फॉर सस्टेनेबल डेवेलपमेंट। सितम्बर 25, 2022, ''इंडिया सीक्स टु स्ट्रेंथन इट्स लोंगस्टैंडिंग टाइज़ विद अफ्रीका. https://www.iisd.org/articles/news/india-stregthen-ties-africa.
2. वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय : वार्षिक रिपोर्ट 2022-23 https://commerce.gov.in/wp.content/uploads/2023/03/AnnualReport-Fy-2022-23-Doc.pdf.
3. एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक ऑफ इंडिया एंड अफ्रीकन एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक 2018. डीपनिंग साउथ-साउथ कोलेबोरेशन : अफ्रीका और भारत के व्यापार और निवेश का विश्लेषण. https://www.eximbankindia.in/Assets/Dynamic/PDF/Publication-Resources/Special/Piblications/Deepening-South-South-Collaboration_An-Analysis -of-Africa-and-India's-Trade-and-Investment.pdf.
4. Gieg P. 2023. इंडियाज अफ्रीकन पॉलिसी : सहस्त्राब्दी पुराने संबंधों की चुनौतियां-स्प्रिंगर.
5. मैक कैन जी., टाईज दैड बाइंड या बाइंड्स दैट टाई। भारत के अफ्रीकी इंगेजमेंट्स एंड द पोलिटिकल इकोनॉमी ऑफ कंन्या। रिव्यू ऑफ अफ्रीकन पोलिटिकल इकोनॉमी। संस्करण 37, अंक 126. दिसम्बर 2010, 462-482
6. जेआईसीए 2012. स्केलिंग ऑफ साउथ-साउथ एंड ट्राईएंग्युलर कोऑपरेशन. https://www/jica.go.jp/Resource/jica-ri/ja/piblication/booksandreports/jrft3q 00000012gg-att/JICA-RI_2012_ScalingUpSouthSouthAndTriangularCooperation - revised2014.pdf.
7. ग्रे.के., गिल्स बी.के. 2016. "South-SouthCooperationandtheriseoftheGlobalSouth." ThirdWorldQuarterly,Taylor&FrancisJournal,Vol.37(4),pages557-574,April.
8- CarmodyP.2020.Dependecenotdebt-trepdiplomacy,.AreaDevelopmentPolicy,5:1,23-31,DOI :10.1080/23792949.2019.170247:.
9. ऑगुन ओल्युवासेयुन जे.2023. इंडिया एंड अफ्रीका लीवरेज क्लाइमेट डिप्लोमेसी. ऑब्ज़र्वर रिसर्च फाउंडेशन.
10. मोदी आर वेंकटचलम एम. 2021. भारत, अफ्रीका और वैश्विक जलवायु राजनीति.
11. सुभाष ए. 2012. ''तकनीकी प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम समर्थन और शिक्षा पहलें: कुशलता विकास में भारत की विदेशों को सहायता का आकलन .'' बेकग्राउंड पेपर प्रिपेयर्ड फॉर द एजुकेशन फॉर ऑल ग्लोबल मॉनीटरिंग रिपोर्ट 2012, यूथ एंड स्किल्स : पुटिंग एजुकेशन टु वर्क
12. यूएनडीपी 2016 में उद्धृत्त।
13. भारत और अफ्रीका की भागीदारी : नए भविष्य का विज़न. : ए.के.दुबे और अपराजिता बिस्वास द्वारा संपादित. स्प्रिंगर. 2016.
14. यूएन-ओएचआरएलएलएस.डेनियल ग्रे.स्थायी विकास को आगे बढ़ाने और सबसे कम विकसित देशों के सुधारात्मक परिवर्तन में दक्षिण-दक्षिण ससहयोग। https:// www.un/org/ldc5/sites/www.un.org.ldc5/files/south-south_cooperation-and-ipoa.pdf.
15. यूएनओएसएससी. साउथ-साउथ इन एक्शन : शांति और विकास के बारे में दक्षिण-दक्षिण और त्रिकोणीय सहयोग. https:// www.southsouth-galaxy. org/ wp- content/uploads/2019/03/UNOSSC-PEACE AndDevelopment-web.pdf.
16. अब्देनुर ए.ई. दा फोनसेका जे.एम.ई.एम.-2013. द नॉथर्स ग्रोइंग रोल इन साउथ-साउथ कोऑपरेशन : कीपिंग द फुटहोल्ड, थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली, 34:8, 1475-1491, डीओआई : 10. 1080/01436597.2013.831579.
17. होसोनो ए., शुनिचिरो एच.,माइन एस, माइ ओ.2011,''इनसाइड द ब्लैक बॉक्स ऑफ कैपेसिटी डेवेलपमेंट इन खरस, होमी एट ऑल (संस्करण) 2011.
18. द सिक्वेरिया इसाबेल ब्रिक्स पॉलिसी सेंटर. 2019. शांति और विकास के बारे में दक्षिण-दक्षिण सहयोग के लिए मामला।